सम्पादक की कलम से

अब शैक्षणिक क्रान्ति की आवश्यकता

यदि वर्तमान में पविर्तन लाना है तो क्रान्तिकारी नीतियाँ अपनाना पड़ती है। क्रान्ति का आशय अहिंसक क्रान्ति जिसमें ऐसी नीतियाँ बनकर लागू की जाय, जिससे देश के नागरिक निर्भय होकर समता मूलक सभी संसाधनों पर अपना अधिकार पाने लायक बन सकें। हाँ कुछ परिवेश में सशस्त्र क्रान्तियाँ हुई है, और सत्ता सिंहासन पलटकर क्रान्तिकारी सत्ता पर पँहुचे, किंतु सशत्र क्रान्ति से हुआ बदलाव स्थायी नहीं हो सकता है। यह सर्व विदित ही है कि यदि शैक्षणिक क्रान्ति हो जाय तो जनमानस का जीवन आनन्द दायक बन सकता है। अपराध विहिन समाज की रचना हो सकती है। शिक्षित नर–नारी अपना, अपने परिवार का, अपने गांव–शहर अपने समाज अपने राष्ट्र का सम्मान ऊंचा उठाते रहेगें । इस कारण प्रत्येक नागरिक को शिक्षित होना अत्यंत ही जरूरी है। और यह दायित्व तो सरकार का ही होता है।

यह कौन करेगा यह विचारणीय है, व्यक्ति या समूह तो कोई निर्णय लेकर सबको शिक्षित हीं कर सकते है। इसके लिये तो शासन को ही नीतियाँ बनाना होगी, अपने देश के नागरिकों को यदि सरकार शिक्षित करना चाहे तो उसका कोई भी विरोधी नहीं हो सकता है। सभी शिक्षित करने हेतु सहायताकरने हेतु तत्पर हैं। फिर इस प्रकार से शिक्षित करने की कठिनाई कहाँ हो सकती है यह विषय तो बहुत ही सरल है, सरकार चलाने वाली राजनैतिक पार्टी का ही दायित्व है कि वह अपनी सरकार को प्रेरित करें कि अपने देश के सभी नागरिकों को शिक्षित करने हेतु सरकार की प्राथमिकता बनाकर बजट का इतना प्रावधान करे, कि शिक्षा की पहुँच शत्प्रतिशत् हो सके। यह बजट कोई सदा ही इतनी राशि का नहीं होगा, यह तो केवल 10 वर्षों तक ही बजट बड़ा रखना होगा बाद में जब शत्प्रतिशत् नागरिक शिक्षित हो जायेगें तो नाम मात्र के शिक्षा बजट से काम चलता रहेगा। और शिक्षित समाज सरकार के खजाने में समुचित कर (टेक्स) जमा करने में प्रसन्नता अहसास करेगें।

शिक्षित व्यक्ति सम्पन्न बनता है और जो सम्पन्न बनता है व सरकार व उसकी सभी ऐजेंसियों को टेक्स देने लायक हो जाता है। जब टेक्स ही इतना मिलने लगेगा तो खर्च करने की कोई समस्या ही नहीं होगी। हम इस प्रकार समझ सकते है आस्ट्रेलिया की सरकार के पास टेक्स की इतनी राशि आ रही है, जिसे वह खर्च ही नहीं कर पा रही थी, फिर उसने अपने सभी नागरिकों को एक निर्धारित राशि (वर्तमान में एक हजार डालर) पेन्शन के रूप में देना चालू कर दिया जिससे वहाँ के नागरिक जरूरत से भी अधिक सामग्रियां क्रय करने लग गये फिर विक्रय पर इतना टेक्स सरकार के खजाने में भरपूर आ रहा है। यानि यदि नागरिक शिक्षित है तो देश भी आत्म निर्भर है। फिर किसी को रोटी कपड़ा और मकान के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता ही नहीं हैं।

हमारे देश की सरकारो ने अपनी शिक्षा नीतियां हो ऐसी नहीं बनाई कि सभी नागरिक शिक्षित होकर साधन सम्पन्न बन सके। खासकर हमारे देश की सरकारों ने तो शिक्षा का एक विभाग बनाकर उसको थोड़ा सा बजट देकर खानापूर्ति का ही उदाहरण पेश कर रही है। हाँ चाहे कांग्रेस, जनता पार्टी, संयुक्त मोर्चा, भजपा आदि सरकारों की जो शिक्षा नीतियाँ रही सभी एक जैसी ही रही किसी ने भी अपने सभी नागरिका को शिक्षित करने हेतु दो अंको का बजट प्रावधान ही नहीं रखा। इस कारण देश के नागरिक हाल–बेहाल है और जाति धर्म सम्प्रदाय की उलझान में ही फंस गये है। इन्हें कब आजादी का अहसास होगा ?

हाँ दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने अपने प्रदेश में शिक्षा का बजट बढ़ाकर शिक्षा की दशा सुधारने की नीति अपनाई है। अभी 26 प्रतिशत् राशि शिक्षा बजट की निर्धारित की है इस कारण शिक्षा व्यवस्था दिल्ली में सर्वोत्तम है।

अब तो जो शिक्षित नागरिक है उन्हें सरकारों पर इस प्रकार का दबाव बनना होगा कि सरकार के बजट में शिक्षा के लिये इतना प्रावधान हो कि कोई भी बच्चा अशिक्षित नहीं रहे।

याने अब शैक्षणिक क्रान्ति की आवश्यकता है और यह क्रान्ति सरकार द्वारा स्थापित करना हैं। बन गई है। इस प्रकार से यह अपेक्षा है कि अपने सभी नागरिकों को शिक्षित करने हेतु ऐसी शिक्षा नीति बनाये जिससे राष्ट्र का उत्थान होने में योगदान मिल सकें। 17 वीं लोकसभा में चुनी गई सरकार को शुभकामनाऐं नई सरकार शिक्षा पर समुचित बजट प्रावधान कर सर्वशिक्षा का अभियान सफल करें यह कामना है।

रामनारायण चौहान

क्या आप जानना चाहेगें?

साप्ताहिक 'दीनबन्धु'

महात्मा जोतीराव फुले ने 24 सितम्बर 1873 को "सत्यशोधक समाज की स्थापना की जिसके सदस्य श्री कृष्णराव पाण्डुरंग भालेकर थे, वे पुणे के जिला न्यायालय में लिपिक थे, सत्यशोधक समाज का कार्य करने के लिये उन्होनें 1874 में नौकरी छोड़ दी और वे समाज के प्रचार के लिये स्थान –स्थान पर सभाएँ आयोजित करने पँवाड़े तथा गीत गाने और भाषण देने आदि कार्य करने लगे। अपनी लेखन क्षमता पर पूरा विश्वास था और वे समझते थे, कि यदि अपना मुख्यालय हो तो सत्यशोधक समाज का कार्य अधिक प्रभाव पूर्ण हो सकेगा। फिर सत्य शोधक की एक सभा हुई, जिसमें पत्र–प्रकाशन पर चर्चा हुई और भालेकर ने पत्र प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी अपने

उपर ले ली। समाज के पास पर्याप्त धन न होने से उन्होनें अपने पैसे से मुख्यालय खरीदा और "दीनबन्धु" साप्ताहिक पत्र का पहला अंक 1 जनवरी 1877 को प्रकाशित किया लेकिन दीनबन्धु को उसके जन्म से ही संकटो ने घेर लिया चूंकि ''दीनबन्धु'' कट्टरपंथियों पण्डे–पुरोहितों और श्री विष्णु शास्त्रों चिपलूणकर जैसे सत्यशोधक समाज के आलोचकों पर दूर पड़ता था। उसका पाठक वर्ग ब्रह्ममणोंतर था, एक संख्या बहुत कम थी, और दुसरे उन्हें पठन–पाठन में विशेष रूचि नहीं थी। इससे पहले वर्ष दीनबन्धु के वार्षिक ग्राहकों की संख्या सिर्फ 13 थी। आगे 1880 में जब "दीनबन्धु" का स्थातंरण मुम्बई किया गया, तब ग्राहकों की संख्या 370 हो गई फिर अच्छे लेखको की भी कमी थी।

इन सभी मुसीबतों का मुकाबला करते हुए श्री भालेकर अपने खर्च से सन् 1879 तक "दीनबन्धु" को चलाते रहे। इस कार्य में उन्हें बहुत पैसा उधार लेना पड़ा सन् 1880 में श्री नारायण मेघाजी लोखंडे "दीनबन्धु" के सम्पादक बने।

रामनारायण चौहान

अन्धविश्वास, पाखण्ड विरोधी सन्त शिरोमणि कबीर महामना फूले

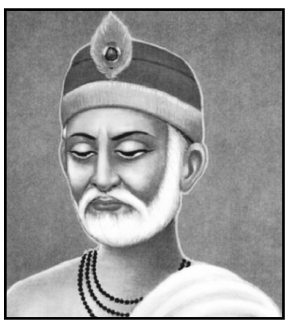

जो अन्धविश्वास पाखण्ड विरोध का कार्य 14वीं शताब्दी में सन्त कबीर ने काशी (वाराणसी) में किया वही पाखण्ड विरोध का कार्य 500 वर्ष बाद (19वीं शताब्दी) महामना ज्योतिबा फूले ने पूना में प्रारम्भ किया। दोनों ही महापुरुषों की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। सन्त कबीर तो ज्यादा पढ़े लिखे भी न थे। उन्होंने स्वयं अपने बारे में लिखा है ''मसि (स्याही) कागज छुओ नहीं कलम गही न हाथ उन्हीं कबीर पर आज कल हिन्दी साहित्य के लोग पी0एच0डी0 कर रहे हैं। यह तथ्य कबीर चेतना शक्ति की उच्चता को दर्शाता है।

कबीर का जोर मन की शुद्धता पर अधिक था। महामना फूले ने सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक में लिखा है 'मन को सुधारे बिना सभी सुधार व्यर्थ है।' उसी क्रम में कबीर ने जोर देकर कहा है –

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पन्डित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पन्डित होय ।।

यहाँ पन्डित का अर्थ ज्ञानी से है (प्रेम = पे + र् + म) प्रेम का अर्थ है बिना स्वार्थ का लगाव जो कि देखने में बहुत कम मिलता है। उसके विपरीत वासना = स्वार्थ के कारण लगाव खूब दिखाई पड़ता है। प्रेम तो परिवार में भी कम दिखाई पड़ता है। प्रेम के अभाव के कारण आज परिवार, समाज, राष्ट्र पूरी पृथ्वी अपनी ऊर्जा नकारात्मक कार्यों में लगाकर अपनी ही हानि कर रही है और पूरी पृथ्वी के मानवों के मध्य तृतीय विश्व युद्ध का खतरा बढ़ता जा रहा है।

महामना फूले ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में सार्वजनिक सत्य धर्म नामक पुस्तक में जो लिखा है उसके अनुपालन से ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है परन्तु उस पुस्तक के बारे में हमारे ही समाज के लोगों को पता नहीं है तब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रम्प तथा उत्तरी कोरिया के तानाशाह किम जोंग से क्या उम्मीद की जा सकती है।

इसी प्रकार पाखण्ड पर कबीर ने लिखा है –

पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहार
ताते तो चकिया भली, पीस खाय संसार
ईंटा पत्थर जोड़ कर, ऊँची मस्जिद लई बनाय
ता चढ़ मुल्ला बांग (अजान) दे, बहरा हुआ खुदाय

उन्होंने हिन्दू, मुसलमान दोनों को फटकारा हैकोई पक्षपात नहीं किया है। इस प्रकार सन्त कबीर एक श्रेष्ठतम सन्त थे। इसी क्रम में महामना फूले ने जून 1873 में गुलामी नामक पुस्तक लिखकर पुराणों की मनगढन्त कहानियों का पर्दाफाश किया तथा लोगों को पाखण्ड, अन्धविश्वास को छोड़ने को कहा।

सन्त कबीर की उल्ट वासियों के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है और यदि जानकारी है भी तो उसका गहन अर्थ का बोध कम लोगों को होगा।

बरसे कम्बल भीगे पानी, चींटी के मुँह हस्ति (हाथी) समानी ।

, , , , , , , , , , , , , , , , , ,

'एक अचम्भा मैंने देखा कुआं में लागी आग
पानी–पानी जल गया, मछली खेले फाग।'

उपरोक्त दोनों से प्रतीत होता है कि यह नहीं हो सकता है परन्तु सन्त कबीर बड़े दूरदर्शी थे। उनका मानना था कि समाज में समता परक व्यवस्था यदि नहीं होगी बल्कि ऊँच–नीच, ब्राम्हण शूद्र, काले–गोरे, जन्म आधारित श्रेष्ठता होगी तब यह उल्टी लगने वाली बातें हकीकत में दिखाई पड़ेगी।

महामना फूले ने अपना पूरा जीवन समता मूलक समाज बनाने पर लगाया कि शिक्षित होकर लोग सुधार करेंगे परन्तु आज भी जन्मजात श्रेष्ठता सवर्ण की कायम है परिणाम यह हुआ कि 15 प्रतिशत की आबादी का सवर्ण समाज आज 85 प्रतिशत शूद्र (बहुजन) से आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक नौकरियों में कहीं आगे है। जबकि संविधान की शक्ति (वोट की शक्ति) से 85 प्रतिशत अधिक विकसित होना चाहिए था।

सारांश

संत कबीर जयन्ती (ज्येष्ठ पूर्णिमा के अवसर पर समस्त **OBC + SC + ST** को संगठित होकर महामना फूले एवं बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर का सपना साकार करना चाहिए जिसमें समस्त बहुजनों में जाति का रोग न हो सबको शिक्षा मिले, सब में समता हो, सबका विकास हो, सभी सुखी हों। यह आज राष्ट्र हित में आवश्यक आवश्यकता है।

एस0बी0 सैनी **(B.E.)**
पूर्व मण्डल अभियन्ता **BSNL**
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

सामाजिक चिंतन (भाग-24)

समाज सेवा से ठोस परिणाम लाओ

परम्परा से कई लोग समाज सेवा करते आ रहे है। समाज सेवा का कोई माप दण्ड नहीं है यह तो अपनी स्वंय की खुशी के लिये कहने की बात है कि मैं भी समाजसेवी हूँ। वास्तव में वह समाज सेवी ही है क्योंकि जो भी व्यक्ति स्वार्थ से हटकर किसी और के लिए छोटी से छोटी सहायता सेवा सहयोग मार्ग दर्शन करने की भावना से काम करता है वह समाज सेवी ही है। किन्तु कई लोग ऐसे भी होते है जो कुछ करते ही नहीं अपने स्वहित अपने लाभ के लिए जो कुछ भी करता है, वह समाज सेवी कैसे हो सकता है। फिर यदि अधिकांश लोग समाजसेवी ही हैतो समाज में जागृति तेजी से क्यों नहीं आ पा रही है। यह गम्भीर चिन्तन का विषय है। आइये कुछ विचार चिन्तन करते हैरू

हम समाज सुधार करने वाले महापुरूषों द्वारा किये गये कार्यों का अवलोकन करते है। हमारे पुरूखों ने मानव जीवन का वैज्ञानिक स्वरूप से आनन्द नहीं लिया, वे तो केवल दाल–रोटी खाओ–प्रभु के गुण गाओ वाली परिस्थिति से सन्तुष्ट थे, उन्हें दिशा देने वालों की कमी थी और जो दिशा देने वालों विद्वान होते थे, वे ज्ञान अर्जित कर दुसरों को ठगने का काम कर अपना – अपने परिवार का जीवन यापन करते थे, वे परम्परागत शिक्षित होकर शिक्षा भी केवल अपने वर्ण तक सीमित रखकर दुसरों का लाभ उठाने की जीवन शैली अपनाते थे। फिर भी हमारे ही देश में कई ऐसे महापुरूष हुए है, जिन्हें शिक्षित होने का अवसर तो नहीं मिला फिर भी वे परोपकार की भावना से ओतप्रोत होकर दुसरों के कल्याण के लिए कुछ न कुछ करने हेतु आगे आते रहे। इस कारण वे अशिक्षित रहकर भी समाजसेवा करने में हेतु आगे सफल रहे है। जिसका परिणाम है कि छोटे से छोटे ग्राम से लेकर शहरों तक अपने अपने समाज की धर्मशाला बनाकर सार्वजनिक कार्य करते थे उनके द्वारा सामूहिक सहयोग से निर्मित धर्मशालाएँ – मन्दिर वर्षों से समाज की धरोहर है। एक बहुमूल्य समृद्धि सम्पत्ति समाज की खड़ी करके निस्वार्थ जीवन जी कर अपना योगदान कर गये है। यही धरोहर वर्तमान समाज उपयोग कर रहा है।

समाज में ऐसे महापुरूष भी हुऐ है जिन्होंने अपने लिये नहीं दुसरों के लिये अपना जीवन न्योछावर किया जैसे महात्मा जोतीराव फुले, सावित्रीमाई फुले नारायण मेघाजी लोखण्डे सन्त कबीर सन्त नानकदेव डॉ. भीमराव अम्बेड़कर, युगपुरूष रामजी महाजन, लिखिराम कावरे (म.प्र.), ताराचन्द चन्देल, रघुनाथ परिहार (राजस्थान), साधुराम सैनी, मुल्कीराज सैनी, तेलूराम सैनी, आर.एन.माली. (उत्तरप्रदेश), पृथ्वी सिंह विकसित, सुखबीर सैनी (उत्तराखण्ड) चौ. तुलसीराम सैनी, महाशय ताराचन्द आर्य, बाबू ज्ञानेन्द्र सैनी (हरियाणा), सर गुरनामसिंह सैनी डेरी बस्सी (पंजाब), जालम सिंह पटेल (छत्तीसगढ़), चौ. गगन सिंह सैनी, लाला मिट्ठनलाल तम्बाकू वाले, चन्द्रसेन फकीरचन्द सैनी, कु, सुरेन्द्र सैनी पद्मभूषण, शान्ति स्वरूप सैनी, बाबू गंगादल सैनी, दिल्ली, जगदेव बाबू, नक्षत्र मालाकार (बिहार) आदि–आदि की समाज सेवा वर्तमान पीढ़ी के लिये प्रेरणादायक है।

हमारे समाज की आबादी के मान से हमें किसी क्षेत्र चाहे राजनीति उद्योग व्यवसाय, प्रशासन आदि में आगे क्यों नहीं बढ़ पा रहे है? क्या शिक्षा की कमी है? क्या आर्थिक रूप से कमजोर है ? क्या हम आगे बढ़ने वालों की टांग खींच कर नीचे गिराना चाहते है? क्या हमारे राष्ट्रीय प्रांतीय या क्षेत्रिय स्तर पर सर्वमान्य समाजनेता नहीं है? क्या हमारी विश्वशनीयता ही कोई नहीं है? क्या बहुत ही मतलबी है? क्या घमंडी है? क्या हम स्वाभीमानी है? क्या पूरी तरह से आलसी है? क्या हम दुसरों की गुलामी गिरी–खुशामद करना पसंद करते हैं ? क्या केवल बड़े नेताओं के कहने पर दरी–चादर टेबल कुर्सी बिछाने – उठाने में ही संन्तुष्ट है? क्या क्या हममें कमी है? क्या हम इतने पिछड़े है कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक ही नहीं हैं? क्या हम रीति–रिवाज में अपनी पूंजी बर्बाद करने में अपना मान–सम्मान मानते है। हम राजनेताओं के बहकावे में आकर केवल गुलामी में ही खुख होते है? क्या हमारा जीवन इन्हीं परिवेश में ऐसे ही बर्बाद होता रहेगा। करिये–चिन्तन करिये कही न कही से रास्ता मिलेगा और हम एक दुसरे के सहयोगी हितचिंतक परस्पर सहयोगी कम से कम ग्रेज्यूवेट परिवार बनकर अपना मुकाम हासिल करने हेतु उपाय करेंगे।

फिर विचार करें चिन्तन करें प्रत्येक व्यक्ति केवल कमाने खाने परिवार पालने, रिश्तेदारी निभाने के लिए ही पैदा नहीं हुआ है। अपने महापुरूषों के आदर्श मानकर हर कोई अपनी सामर्थ्य शक्ति से दुसरों के लिए अपने जीवन में कुछ न कुछ तो कर सकता है। यदि आर्थिक रूप से या मानसिक रूप से ही हमारा समाज आगे बढ़ना सीख जाएगा तो जरूर ठोस रूप से आगे बढ़ेगा। परिणाम दायक कार्यों को अंजाम देगा। अपनी–अपनी फील्ड में कुछ न कुछ करिए। बड़े सपनों को देखना प्रारम्भ करिए परिणाम आयेगा। यही समाजसेवा होगी।

हम प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षा करते है कि समाज सेवा के क्षेत्र ठोस परिणाम लाने हेतु प्रयत्न करें।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096

फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171

E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

सत्यमेव जयते

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।

मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रू. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - अप्रैल से मई 2019

● मध्य प्रदेश – जगदीश सैनी (जबलपुर), सुरेश सुमन (ब्यावरा), राजेश चौहान (कन्नौज), कैलाश चौहान (आगर), डॉ. प्रेमलता सैनी, छाया सैनी, आर. डी. माने, गजानंद भाटी जगदीश सोंलकी, अविनाश फसाटे, मधु अम्बाड़कर, जी.पी. माली, राजेन्द्र अम्बाड़कर, ओ.पी.राजनकर, राजेन्द्र कुमार सैनी (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, मुन्नासिंह कुशवाह (उज्जैन), जगदीश माली (भौंरासा), दिनेश परमार (तराना), लोकेश वर्मा (महू), विनोद मकवाना, हरी भाई (बड़नगर), यशवंत नेहरू (पीपलरांवा), काशीराम देहलवार (ग्वालियर), डॉ. रामशिन माली, बद्रीप्रसाद मोहरी, जगदीश चौहान, पी.सी. हरोड़े(देवास), रमेश चौहान (कजलास) ।

● महाराष्ट्र– शिवदास महाजन (पुणे), शंकरराव लिंगे (सोलापुर), गौतम क्षीरसागर (उस्मानाबाद), डॉ. के.एस. यावलकर (नागपूर), दिनेश रोड़े पाटिल,

● उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी (मेरठ),एड. विक्रम सैनी (सराहनपुर), अवनीश सैनी (गाजियाबाद)।

● राजस्थान– हरगोपाल भाटी (झालावाड़), रामेश्वर गेहलोत (जोधपुर), पूनमचन्द कच्छावा बुधसिंह सैनी (जयपुर), मोतीबाबा फुले (फालना), बंशीलाल माली, प्रभुलाल माली बनेड़ा (भीलवाड़ा), पी. सी. सैनी (कोटा)।

● गुजरात / गंगाराम गेहलोत (अहमदाबाद)।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), ।

● बिहार– संजय मालाकार (पटना), गौरी प्रसाद (पहलेजा), बी.एन.सिंह. सैनी (डेहरी–आन–सान),

● हिमाचल प्रदेश– पी.डी.सैनी (कांगड़ा), ।

● हरियाणा– हेमन्त सैनी (रेवाड़ी), राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा)।

● कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर), भीमाशंकर मालागार (बीजापुर)

● दिल्ली– चौ.इन्दराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, आजादसिंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, एड. के.पी.सिंह, मनजीत सिंह सैनी, आर.पी. सैनी, लखपति सैनी, श्री पाल सिंह सैनी, खूबचन्द सैनी, जी.एल. सैनी ।

● जम्मू एण्ड कशमिर– श्री कृष्ण सैनी (जम्मू)।

● तमिलनाडू– व्ही. एम. पल्लव मोहम वर्मा ।

''स्वाभीमानी लोग ही संघर्ष की परिभाषा समझते है
जिनका स्वाभीमान मरा होता है, वह गुलाम होते है।,,

(डॉ. भीमराव अम्बेड़कर)

''जिस घर में महिला शिक्षित हो जाती है ।
उस घर में सारा परिवार शिक्षित हो जाता है।''

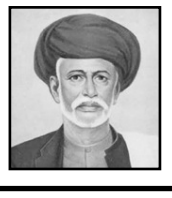

महात्मा जोतीराव फुले

"If you Born Poor
"It's not your Mistake
"But if you Die poor
"It's your Mistake"

Bill Getes

From: Pre. Month

A FORGOTTEN LIBERATIOR, THE LIFE AND STRUGGLE OF SAVITRI BAI PHULE

Apart from setting up the first ever school for women in India, Savitribai started a women's association called Mahila Seva Mandal as early as 1852. The association worked for raising women's consciousness about their human rights and other social issues. Being a woman, she easily recognized the double downtroddenness of most women as she saw the gender question in relation to caste and brahmanic patriarchy. She engaged herself at various levels to address women-specific problems. She campaigned against victimization of widows. She advocated and encouraged widow remarriage. She canvassed against infanticide of 'illegitimate' children. She opened a home to rehabilitate such children. Her won home became a sanctuary for deserted w3.omen and orphaned children. She went on to organize a successful barbers' strike against the prevailing practice of shaving of widows' heads. She did all this taking grave personal risks. Many of these misogynistic practices have now receded in the background. But in her time, they tormented and destroyed countless women. Maligned, humiliated, and attacked for challenging the anti-women practices, Savitribai's struggle encouraged and inspired a whole generation of outstanding campaigners for gender justice in Maharashtra- Dr. Anandi Bai Gopal Joshi, Pandita Ramabai, Tarabai Shinde, Ramabai Ranade, and many others have been inspired by her efforts.

ACKNOWLEDGEMENTS

The idea and encouragement for doing this book came from many activist friends, many of them - Dinesh Sandila, Manju Maurya, R D Lall, Ramnarayan Chauhan, Kanta Bhimrao and Dilip Ghawade- are carrying forward the struggle of Jotiba and Savitribai Phule. We owe them very special thanks.

Many thanks to the contributors who wrote for us at short notice. And our apologies to those, whose writings we could not accommodate in this book despite our best intentions, due to many constraints.

We acknowledge our debt to the publication division of the government of Maharashtra for the photographs] portraits, and paintings, including the one on the cover that we have reproduced in this book, our heart-Felt thanks to Subhash Goliat for the Excellent drawings.

The Broken … Restored

Special Thanks to Graham and his colleagues at Mountain peak for their editorial support, and keen interest in the production of the book.

Lastly, we thank Neha Wadhawan who did the copy-editing at the eleventh hour at our request.

BY:- BRIJ RANJAN MANI & PAMELA SARDAR

INTRODUCTION
BRAJ RANJAN MANI

Knowledge-production, reproduction of culture, and historiography in contemporary India- with some exception of challenging attempts in recent years-remains deeply biased and brahmanical, despite the dazzling democratic façade and politically correct vocabulary. Contestations to the dominant discourse and meta-narratives of the past and present by the marginalised majority-dalits, adivasis, other backward classes (OBCs), Muslims, Sikhs, Christians, and other suppressed ethnic and regional communities-remains confined to the margins; while brahmanical hegemony continues to overwhelm the intellectual domain. In place everywhere are refurbished, replenished brahmanical canons and constructs which are blithely flaunted as 'Indian' and 'national' this, so much so, that the modernization of brahmanical tradition easily becomes the modernization of Indian tradition. The Indian elite's winning trick, right from the colonial nineteenth century to the present, is to selectively cull from the modern European ideas and institutions, and ingeniously align and integrate them with the brahmanic structures of caste, class, and gender. The Basic design behind such 'change with continuity' is to preserve and innovate upon traditional dominance over the masses. As in the past, so in the present, the over-all objective is to mislead, exploit and exclude the majority.

India remains the most iniquitous society on the earth. The more things change, the more they remain the same. Extreme disparities in terms of wealth, health, and education have given birth to a new form of two-India. Just over ten percent of the population, mostly from aggressive castes, with different levers of power in their hands, make sure that the rest continue to live in material and mental subjugation, and provide the 'nation' their cheap labour. While all wealth generation and development are taken up in the name of empowering the poor, such 'nation-building' leaves the poor more demoralized, more marginalized. They still struggle for food, drinking water, sanitation, education who are these people? More than ninety percent of them are adivasis, dalits, OBCs, and Muslims. Their representation in the booming market economy, business and industrial domain, information technology, and entertainment industry is next to nothing. However, the embedded brahmanic media and academia presents the growth without equity as development with a humane face. Caste as institutionalized discrimination, both at material and ideological-cultural levels, continues to cripple the lives of millions in several and covert ways.

Caste has for centuries been the major civilisational fault-line in the Indian subcontinent. To cut a long and complicated story, The supposed divine division of labour and harmony of caste has always dazzled its creators and beneficiaries, while the demoralized majority condemn it as a vicious system of brahmanic colonialism- the colonialism that drains away the cultural, social, and economic resources within the nation from the productive majority to the parasitic few ensconced at the top of the caste hierarchy. The toxic genius of caste hierarchy and its creators is to divide, disintegrate and dehumanize the toiling majority. Fragmented into hundreds of hierarchically arranged castes and subcastes, each sparring with each other for meager resources, the productive people fail to build a broader solidarity against their common exploiters.

Birth-based caste provides a breeding ground for mutual animosity. Thus, keeping people divided and weak for exploitation as well as making common activity and effort for the greater good impossible. It was for this precise reason that the caste culture has been patronized and promoted by authoritarian kings and feudal-aristocratic forces of many stripes, including the medieval Mughals and modern British colonizers who saw in caste and Brahmanism a uniquely effective tool to subjugate and rule the masses. Colonialism in india, contrary to the dominant belief] was wedded to the forces representing caste and Brahmanism This colonialism was founded on the collusion, collaboration, and mutual interests of British and Indian ruling classes and intelligentsia. The native political and intellectual elites not only provided crafty, selective knowledge to the British about India and things Indian, but also controlled the Raj machinery at the local and intermediate levels. They oiled the wheels of colonialism, playing the role of the intermediary between the British rulers and Indian masses. Self-strengthening and modernizing themselves with this collaboration, the Indian elites gradually found confidence to build their own brahmanic-casteist nationalism, pretended to represent all Indians, demanded and got a greater share of power within the Raj, and finally launched the movement to kick out the British (Aloysius 1997; Mani 2005).

Cont. Next Month

LOKSABHA MEMBER -2019

- Su. Sangh Mitra Maurya (MP) BJP
  106, Vill. Sunhara, Po. Bhujpura, KASGANJ (20712) (UP) 9415742177
  sanghmitramurya@yahoo.com
- Sh. Ravindra Kushwaha (MP) BJP
  Vill.Mahathapur &P.O Ethana, Chandoli, DEORIYA (274701) (UP)
- Dr. Amol Kolhe (MP) NCP
  K-10, Ambedkar Nagar, Parelgaon, MUMBAI (400012) (MH)
- Sh. Nayab Shingh Saini (MP) BJP
  Vill. Mirzapur Maira, Po. Lakknoura, AMBALA (134003) (HR) 9416188200
  nayabsaini1@gmail.com
- Sh. Mahabali Singh Kushawaha (MP)
  JDU, Vill. Khiri .Po. Bhagwan Pur, KAIMUR (821101) (BR) 9013180111
- Sh. Baidhynath Prasad Mehto(MP) JDU
  Vill. &Po. Pakariya, West Champaran WEST CHAMPARAN (845838) (BR)
  9013180159, 9431212725
- Sh. Santhosh Kumar Kushwaha (MP)
  BJP Vill. Kocheli Post Bassoni , Thana Daguara PURNIYA (854326)
  (BR) 9431269609
- Sh. Ramlingam S. (MP) DMK
  Srinivasoniiur Thirunagas waram, Kumbakonam Taluk, THANJAVUR (612204) (TN) 9443151525
  ramalingemseliaperumal124@gmail.com
- Ad. Parthiban S.R (MP) DMK
  133/3Gayatrinagar, MTS Nagar, Back Side Asthampatti, SALAM (636007) (TN)
  9443906806/ 8883442555
  srparthibon060268@gmail.com
- Dr. DNY Senthil Kumar S (MP) DMK
  129-C Winding Driver, Chinnasamy Street, DHARAMPURI (636701) (TN)
  drsonthilkumar.s@hotmail.com
- Sh. Vishanu Prasad (MP) INC
  New No.-6, Old No. 17, ist Street, East ABHIRAMAPURAM Mylapore, MYLAPORE (600004) (TN)
  9688613678, 944489835
  mkvisprasad@gmail.com
- Sh. S.Jagath Rakshgkam (MP) DMK
  1, First Main Road Kasthuiboi, Nagar Adyar CHENNAI (600020) (TN)
  044-24913113
- Sh. Queen OJa (MP) BJP,
  Jivagiri Ashram Road South Sarania, behind Ulubari P.O. Ps. Patnanbazar Guwahati 7,Distric, KAMRUP (781014) (AS)
- Sh. Pradyut Bardoloi (MP) INC
  B.K. Chatia Path Block Tiniali Po. Margherita, TINSUKILA (786181) (AS)
  9435036896 tipamputra@gmail.com

RAJYA SABHA MEMBER-2019

Sh.Madanlal Saini (MP) BJP
Ward No. 38, Jadam Nagar,
Radha Krisnapura,
SIKAR (332001) (RJ) 9829298024

Collected by
Ramnarayan Chauhan
General Secretary
Mahatma Phule samajik shikshan Sansthan
Delhi, Mo.No.-9990952171
Date-31May2019

देश भर के समाचार

● पाटोड़ा मोड़ उस्मानाबाद (महा.)– सत्यशोधक रीति से विवाह समारोह का आयोजन में महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पूर्व अध्यक्ष शंकरराव लिंगे ने आर्शीवाद दिया।

● घुड़कड़ी (हिमाचल प्रदेश)– सैनी समाज का सम्मेलन प्रदेश जल प्रबन्धन बोर्ड के अध्यक्ष दर्शन सैनी के मुख्य अतिथ्य में हुआ। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थानकी कार्यकारिणी सदस्य पी.डी. सैनी अध्यक्ष सैनी सभा ने कांगड़ा में धर्मशाला हेतु भूमिदान करने की घोषणा की सभा में रमेश सैनी, सीताराम सैनी, एच.के.चांद सैनी, अंशुल सैनी, राजेन्द्र सैनी, सुनील सैनी, अर्जित सैनी, प्रवीण सैनी, बलवीर सैनी, संजय सैनी, रवि सैनी आदि ने सम्बोधित किया।

● अजमेर (राज.)– बी.एस. भाटी को अजमरे विद्युत वितरण कम्पनी (डिस्कोम) का एम. डी. बनने पर बधाई।

● जयपुर (राज.)– महात्मा ज्योतिबा फुले राष्ट्रीय संस्थान के संस्थापक स्व. ताराचन्द चन्देल की 81 वीं जंयति पर प्रदेशाध्यक्ष मांगीलाल पँवार शहर अध्यक्ष भवानी शंकर माली ने बताया कि संस्थान की स्थापना 1994 में हुई। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के संयुक्त सचिव एड. अनुभव चन्देल, संस्थान के नीलम पापटवान, हजारीलाल सैनी, हरीकिशन सैनी (एड.) मूलचन्द अजमेरा, हनुमानप्रसाद सैनी, एम. पी. सैनी, चन्दालाल सैनी, देवेन्द्र स्वरूप चन्देल, शंकरलाल सैनी, भवानीमल अजमेरा, राम अवतार सैनी, सुरेश सैनी, सुनील सैनी, रूपेश चन्देल, एड. महेश कुमार, विक्रमसिंह सैनी, पूनमचन्द कच्छावा श्रीमती अनिता चन्देल, एड. मंजुल सैनी, मीनाक्षी सैनी, आदि ने उनके चित्र पर माल्यापर्ण किया एवं उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया।

● अमरोहा (उप्र.)– ऑल इंडिया सैनी सभा के राजपाल सैनी, संजीव सैनी, शंकरलाल सैनी, राजकुमार सैनी आदि ने अमरोहा का नाम ''ज्योतिबा फुले'' नगर के नाम करने हेतु शासन से मांग की ।

● भीलवाड़ा (राज.)– राजस्थान प्रदेश माली सैनी युवा महासभा के शहर अध्यक्ष देवीलाल सैनी जिला अध्यक्ष गोपाल लाल माली ने शहर समिति का गठन किया।

● भोपाल (मप्र.)– फूल माली समाज की मिटिंग में अध्यक्ष गीता प्रसाद माली, हरिनारायण माली, कृष्णा गोपाल माली, घनश्याम राहुल, लक्ष्मण, माली, शान्ति माली, हरीसिंह सैनी ने समाज को एकजूट होने का आव्हान किया।

● भाभर(गुजरात)– 28 अप्रैल को 32 गाँव के माली समाज द्वारा शक्षैणिक सेमिनार का आयोजन किया जिसमें सर्व श्री पांचाभाई वी माली नवीन भाई माली, भरत भाई भाटी, एन. डी.माली, भारमल भाई माली, पिन्केश भाई, गणपत भाई, रामी राणाभाई माली, असरत भाई माली, सुरेश भाई माली आदि ने सामाजिक जागृति एवं एकता से काम करने का संकल्प लिया। बच्चों को शिक्षित करने का आव्हान किया।

● सोलन (हिमाचल प्रदेश)– सुरेश सैनी उपप्रबन्धक एच. एफ. सी. एल. कम्पनी के पुत्र पार्थ सैनी ने सीबीएसई परीक्षा में 500 मेंसे 497 अंक पाकर संयुक्त रूप से तीसरे नम्बर पर रहा । सलोगड़ा के रहने वाले पार्थ विद्यार्थि अब बी–टेक करना चाहता है। हमारी शुभकामनाऐं। ये हिमाचल प्रदेश के टापर्स है।

● सीकर (राज.)–मदनलाल सैनी (मजदूर) का पुत्र हरिप्रसाद सैनी के डाक्टर बनने पर बधाई । ये ढाणी पाट्या वाली दायरा खण्डेला जिला सीकर के रहने वाले है।

● नासिक (महा.)– 5 मई को परशुराम साई खेड़कर नाट्य गृह शालिमार में 16वाँ माली समाज वधु–वर मेलवा एवं पुस्तिका का प्रकाशन, विनोद नाईक एवं महेश नाईक द्वारा उक्त जानकारी दी ।

● उज्जैन (मप्र.)– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज धर्मशाला में आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● हरसोला (मप्र.)– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज धर्मशाला में सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● देवास (मप्र.)– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज धर्मशाला में आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● भोपाल (मप्र.)– फूलमाली समाज द्वारा 7 मई को सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● धार (मप्र.)– 12 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज द्वारा सामूहिक विवाह समारोह किया गया।

● सारंगपुर (मप्र.)– समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन में 51 वर–वधु 26 अप्रैल को विवाह हुआ।

● मानपुर (मप्र.)– समाज के सामूहिक विवाह 15 मई को 23 जोड़ो का विवाह हुआ।

● खाता खेड़ी (मप्र.)– समाज के सामूहिक विवाह 14 मई को 23 जोड़ो का विवाह हुआ। उक्त जानकारी सुरेश सुमन ने दी।

● रामपुर (उप्र.)– कलेक्टर कार्यालय गेट के सामने पान का खोखा लगाने वाले दिनेश सैनी के पुत्र मोहित सैनी ने सीबीएसई परीक्ष में जिला के टापर है। मोहित आई.टी.में इन्जिनियर बनना चाहता है। बधाई।

● सीकर (राज.)– ललीता सैनी पुत्री चौथमल सैनी विकलांग वर्ग में कक्षी 12वीं में जिले में प्रथम स्थान पाने पर राज्य सरकार द्वारा इन्दिरा प्रियदर्शिनी अवार्ड के रूप में रूपये एक लाख का नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिया। बधाई।

● सोलापुर (महा.)– महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पूर्व शंकरराव लिंगे ने महात्मा जोतिराव फुले की महात्मा की उपाधि दिवस 11 मई को आयोजित कार्यक्रम में सरकार से मांग की है कि :–

1. फुले दम्पत्ति को विशवरत्न की उपाधि दी जाय । 2. फुले दम्पत्ति का मुम्बई में अन्तराष्ट्रीय स्तर का स्मारक बनाकर समाज केन्द्र की स्थापना की जाय। 3. सावित्री बाई फुले ने जिस स्थान पर प्रथम कन्याशाला प्रारम्भ की वहां सावित्रीबाई फुले के नाम पर राष्ट्रीय स्मारक बनाया जाय। 4. पूना में सावित्रीबाई फुले विश्व विद्यालय के वर्तमान लोंगो (चिन्ह) हटाकर सावित्रीबाई फुले का फोटो का बोध चिन्ह (लोगो) स्वीकार किया जाय। 5. कक्षा 10 एवं 12वीं बोर्ड की परीक्षा के प्रति वर्ष दिया जाय। 6. सवित्री बाई फुले की जयंन्ति 3 जनवरी को शिक्षण दिवस मनाया जाय। 7. महात्मा जोतीराव फुले की जयंन्ति 11अप्रैल को शिक्षक दिवस मनाया जाय। 8. सावित्री बाई फुले विश्व विद्याालय पूना में मुख्यद्वार पर सावित्रीबाई फुले की आदामकद प्रतिमा (मूर्ति) लगाई जाय। 9. फुले दम्पत्ति की जीवनी एवं उनके द्वारा किये गये कार्य विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन कक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाय।

● भिवाड़ी (हरि.)– तथागत बुद्ध जंयति 19 मई को माताजी पब्लिक स्कूल में मनाई। उक्त जानकारी अमरजीत मौर्य ने दी।

● ताम चुकपैगोड़ा– उपराष्ट्रपति वैंकयया नायडू ने संयुक्त राष्ट्र वेसक दिवस पर आयोजित वैश्विक समारोह में कहा कि बुद्ध का मार्ग ही बदलेगा दुनिया की तस्वीर उन्होंने आव्हान किया कि शान्ति, सहभागिता स्थिर विकास के लिए बुद्ध का मार्ग अपनाना होगा।

● चाकसू (राज.)– 13 अप्रैल को माली सैनी समाज सामूहिक विवाह समिति द्वारा 51 जोड़ो का विवाह हुआ।

● खिलचीपुर (मप्र.)– फुल माली समाज द्वारा 23 जोड़ो का सामूहिक विवाह समारोह हुआ। उक्त जानकारी सुरेश सुमन ने दी।

● अकतासा झालावाड़ (राज.)– माली समाज के 17 जोड़ों का 7 मई को सामूहिक विवाह सम्मेलन हुआ ।

● रायपुर मालवा– मालवा माली समाज का 16वां सामूहिक विवाह सम्मेलन 7 मई को 29 जोड़ों का परिणय सूत्र हुआ।

● रटलाई (राज.)– मालवा माली समाज का सामूहिक विवाह 7 मई मई को 29 जोड़ें परिणय सूत्र में बंधे ।

● मण्डवर कस्बा झालावाड़ (राज.)– 7 मई को 33 जोड़ो का सामूहिक विवाह सम्पन्न ।

● सारोली (राज.)– माली समाज के 5 जोड़ो का सामूहिक विवाह 7 मई को हुआ । उक्त जानकारी सोनु भाटी ने दी।

● बुलडाणा (महा.)– 3 नवम्बर को आ.भा. माली महासंघ द्वारा युवक–युवति परिचय महा मेलावा आयोजित उक्त जानकारी रमेश हीरलकर ने दी ।

● दिल्ली – महात्मा बुद्ध की 2563 वीं जंयति विश्वभर में 18 मई को मनाई गई। कई संस्थाओं ने 19 मई को आयोजन किये एवं महात्मा बुद्ध के उपदेशों पर जनमानस को जागरूक किया। बुद्ध ने मानव कल्याण के लिए सुगम सरल मार्ग दर्शन किया। इसी कारण विश्वभर में जनमानस बुद्ध के आदर्शों को अपनाते है।

● इन्दौर (मप्र.)– सकल पंच जयपुरी फुलेरा माली समाज द्वारा 7 मई को जोड़ो का सामूहिक विवाह हुआ।

● आगर (मप्र.)– फुलमाली पुरा धर्मशाला में 18वाँ सामूहिक विवाह सम्मेलन 7 मई को 14 जोड़ों का विवाह हुआ।

● राऊ (मप्र.)– श्री गुजराती रामी माली समाज द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह डॉ. जयनारायण जाधव की अध्यक्षता में हुआ । मुख्य अतिथि प्रदेशाध्यक्ष यादवलाल चौहान, गजानंद रामी, दुर्गेश वर्मा आदि अतिथियों ने समाज को शिक्षित होने का आव्हान किया।

● समाज की कार्य कारिणी में अध्यक्ष डॉ. जयनारायण जाधव उपाध्यक्ष जितन्द्र सोंलकी, सचिव मुकेश हारोड़, मोहनलाल हारोड़ महामंत्री रामेश्वर चावड़ा, भोलेनाथ, राकेश यादव, दिलीप डोडिया, कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश बारोड़, सत्यनारायण पड़ियार, सहसचिव कैलाशा परमार, कमल सोलंकी का अतिथियों ने स्वागत किया।

● कानपूर (उप्र.)– भारतीय कछावाहा (कुशवाहा) क्षत्रिय महासभा का 26 मई को कानपूर में पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह।

● नागपूर (महा.)– अखिल भारतीय माली महासंघ के महामंत्री कैलाश जामगड़े ने बताया कि 14 जुलाई को 10 वीं एवं 12 वीं के प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा।

● भोजपुर :– रमेश कुशवाहा को जिलाधिकारी बनाये जाने पर बधाई।

● रायपुरः– छग.:– 18 जून को युवक–यवति परिचय सम्मलेन संयुक्त माली सैनी मरार समाज के अमर भगत लक्ष्मी सैनी, भारती माली, मनोज सैनी ने उक्त जानकारी दी।

● उत्तरप्रदेशः– भागीरथ सेना अध्यक्ष पद का चुनाव 15 जून को।

● सहारनपुर (उप्र.)– पूर्व सांसद स्व. मूल्कीराज सैनी की पोती की शादी में हुई चोरी का खुलासा करने हेतु एस.एस. पी. को सर्व श्री अभयसिंह सैनी, चौ. विक्रम सैनी एड. सैनी सोमपाल सैनी ने ज्ञापन 26 मई को दिया।

● बुराहनपुर (मप्र.)– माली समाज द्वारा 31 मई को 13वाँ सामूहिक विवाह समारोह ।

● वाराणसी (उप्र.)– 2 जून को अखिल भारतीय श्रीमाली महासभा की साधारण सभा का आयोजन । डॉ. आर.एन. पुष्पजीवी ने उक्त जानकारी दी।

● रेवाड़ी (हरि.):– नार्थ इंडिया ओपन नेशनल कराटे चैंपियनशिप में धारूहेड़ा निवासी यश सैनी पुत्र राकेश सैनी ने स्वर्ण पदक जीता। बधाई।

● रोहतक (हरि.):– गुलाब सिंह सैनी, कनाड़ा का नगर में आने पर स्वागत हुआ। उन्होंने युवाओं को शिक्षा एवं नई दिशा देने का आव्हान किया। नरेश सैनी महासचिव ने उक्त जानकारी दी।

● दिल्ली। आल इंडिया सैनी सेवा समाज के युवा अध्यक्ष राजकुमार सैनी ने बताया कि 29 जून को साईं आडिटोरियम लोदी रोड में समाज की आमसभा का आयोजन होगा, जिसमें समाज के नव निर्वाचित सांसदों का सम्मान एवं 10 वीं 12 वीं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया जायेगा।

● समाज के अध्यक्ष दिलबागसिंह सैनी महामंत्री सुमन कुमार सैनी व पदाधिकारीगण सम्मानित करेंगे।

● अमरपुरा (राज.)। लिखमीदास महाराज स्मारक विकास संस्थान की 9 जून को मिटिंग।

● दिल्ली। पूर्वी दिल्ली सैनी सभा के प्रधान जी.एल. सैनी, महामंत्री शिवराज सैनी ने बता कि 2 जून को सभा की मिटिंग में समाज सेवा का संकल्प लिया।

● जोधपुर (राज.)। कु. याहना देवड़ा 96.83 प्रतिशत अंक व सुश्री इन्द्रा देवड़ा 91.33 प्रतिशत अंक 10 बोर्ड में प्राप्त करने पर बधाई।

● चौमू (राज.)। सुश्री रेणु सैनी 10 वीं बोर्ड में 97.33 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर बधाई।

● राज। सुश्री सरोज सांखला 10 बोर्ड में 92.83 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर बधाई।

● दिल्ली। चि. कनिष्क चौहान सीबीएसई बोर्ड 12 वीं में 90 प्रतिशत अंक लाने पर बधाई।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष